कहां होता है नारीयल का बीज!

डॉ. किशोर पंवार

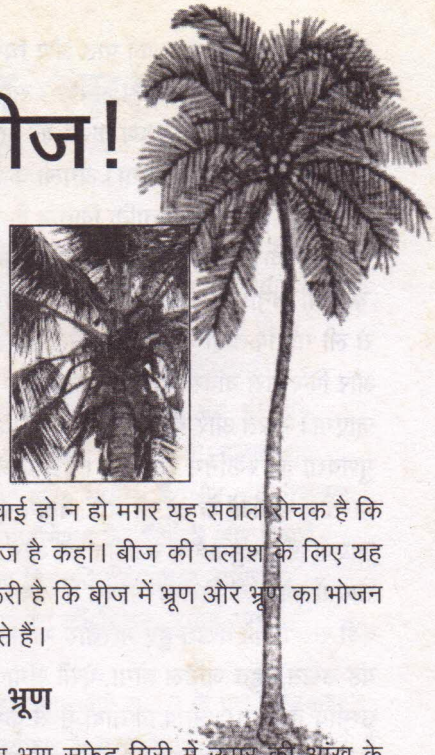

पानी के समीप रहने वाले पौधों के फलों व बीजों का बिखराव पानी के द्वारा होता है। जैसे नारीयल, कमल, केवड़ा। नारीयल के पके फल टूटकर समुद्र में गिर जाते हैं और लहरों के साथ दूर-दूर तक टापुओं में पहुंच जाते हैं। नारीयल एक प्रकार का ड्रूप फल है। इसके अन्य उदाहरण हैं - बेर, आम, अखरोट, बादाम आदि।

अमूमन इसके फलों का छिल्का तीन परतों से बना होता है। बाहरी, मध्य और आन्तरिक। उपरोक्त ड्रूप फलों का बाहरी छिल्का चमड़े जैसा, मध्य छिल्का रसदार और अंदर वाला कठोर होता है। नारीयल एक रेशेदार फल है। इसमें छिल्के की बाहरी परत चिकनी और मोटी होती है। इस कारण समुद्र का खारा पानी फल के अन्दर प्रवेश नहीं कर पाता। शुरुआत में यह हरी होती है जो बाद में सूखकर भूरी हो जाती है। मध्य रेशेदार परत में हवा भरी होती है जिससे यह पानी पर तैरता रहता है। छिल्के के अन्दर वाली परत पत्थर के समान कठोर होती है। यह भ्रूण की रक्षा करती है। इसी वजह से इन फलों को स्टोन फ्रूट्स भी कहते हैं।

सामान्यतः फल के अंदर बीज पाए जाते हैं। ड्रूप प्रायः एक बीज वाले फल होते हैं। बीज में एक भ्रूण होता है जो आगे चलकर अंकुरित होकर नए पौधे का निर्माण करता है। इस भ्रूण के विकास के दौरान भोजन की आवश्यकता होती है। बीज में इसकी व्यवस्था भी होती है। कुछ बीजों में भ्रूण के लिए भोजन बीजपत्रों में जमा रहता है जबकि कुछ बीजों में यह भोजन भ्रूणपोष नामक विशेष ऊतक में संग्रहित रहता है।

कहां है नारीयल का बीज

सवाल यह है कि नारीयल का बीज कहां है। यह सवाल इसलिए भी महत्व रखता है कि कहते हैं नारीयल खाते समय बीज मिल जाए तो बड़े भाग्य की बात होती है। इस बात में सच्चाई हो न हो मगर यह सवाल रोचक है कि नारीयल का बीज है कहां। बीज की तलाश के लिए यह याद रखना ज़रूरी है कि बीज में भ्रूण और भ्रूण का भोजन दोनों शामिल होते हैं।

नारीयल का भ्रूण

नारीयल का भ्रूण सफेद गिरी में ऊपर की आंख के पास धंसा रहता है। अंदर वाले छिल्के के एक सिरे पर तीन गड्ढे से दिखाई देते हैं जिन्हें आंखें कहते हैं। जब बीज अंकुरित होता है तो नया-नवेला पौधा इन्हीं में से एक गड्ढे में से निकलता है। इसका भ्रूण फल के अंदर ही अंकुरित हो जाता है। जिसका निचला सिरा बढ़कर एक बीजपत्र बनता है। इसका निचला सिरा फूलकर स्पन्जी हो जाता है। भ्रूण के ऊपरी सिरे से एक छोटा तना निकलता है जिसके निचले सिरे से कई तन्तुमय जड़ें निकलती हैं। ये जड़ें फल की मोटी रेशेदार परत को भेदकर बाहर आ जाती हैं।

भ्रूणपोष

कठोर परत यानी एण्डोकार्प के अंदर बहुत सारा तरल पदार्थ भरा होता है। यह नारीयल की इन लम्बी समुद्री यात्राओं में मीठे पानी का काम करता है और भ्रूण को पोषण भी प्रदान करता है। बीजपत्र की वृद्धि के साथ भ्रूणपोष पतला होने लगता है। धीरे-धीरे इसका पानी चुक जाता है और यह छिल्के के अंदर गरी के रूप में जमा हो जाता है। अर्थात यह गरी नारीयल का भ्रूणपोष ही है।

तो, नारीयल का बीज कहां है। हम देख ही चुके हैं कि बीज मतलब भ्रूण, भ्रूणपोष व बीजपत्र को मिलकर बनी रचना है। अब नारीयल का भ्रूण तो एक जगह धंसा है और भ्रूणपोष तरल रूप में है। यह सब मिलकर ही बीज कहलाएगा। यानी आप चाहे गरी खाएं, खा तो बीज का ही एक हिस्सा रहे हैं। जिसे आम तौर पर नारीयल का बीज कहा जाता है वह मात्र उसका भ्रूण है।

भ्रूणपोष और विज्ञान

ऊतक संवर्धन सम्बंधी प्रयोगों के लिए हमें एक ऐसे माध्यम की ज़रूरत होती है जिसमें ऊतक की वृद्धि के लिए सारे ज़रूरी पदार्थ हों। इस काम में सर्वप्रथम नारीयल के दूध का उपयोग किया गया था। नारीयल का दूध चूंकि स्वयं प्राकृतिक पोषक पदार्थ है अतः यह सभी आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों की पूर्ति करता है। इसमें विटामिन्स, प्रोटीन, वसा एवं वृद्धि हार्मोन एवं एन्ज़ाइम पाए जाते हैं। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*